17

धर्मी ठहराए जाने के दो प्रबन्ध

(4:4-8)

अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज में रोमियों की क्लास अध्याय 4 पर पहुंचने पर, हमारे टीचर जे. डी. थॉमस बोर्ड पर लिखने लगे। उन्होंने कहा, ''इस अध्याय में पौलुस धर्मी ठहराए जाने के दो प्रबन्धों में अन्तर कर रहा है।''[1] उनके लिखना बंद करने पर उनके प्रयास कुछ इस प्रकार दिखाई दिए:

उन्होंने दूसरे कॉलम पर थपथपाते हुए कहा, ''इसकी तुलना इफिसियों 2:8, 9 से करो।''

इस पाठ में हम रोमियों 4 का अपना अध्ययन जारी रख रहे हैं। इस अध्याय की अपनी चर्चा समाप्त करने तक उम्मीद है कि आपको भाई थॉमस द्वारा किया गया अन्तर स्पष्ट हो जाएगा।

व्यवस्था/कामों का प्रबन्ध	**अनुग्रह/विश्वास का प्रबन्ध**
घमण्ड करना	दीनता
कमाना	कामों से नहीं
मानवीय गुण	अपने आप से नहीं
प्राप्ति	परमेश्वर के अनुग्रह में भरोसा करना
कर्ज़	एक दान

एक अवधारणा का विश्लेषण (4:4-8)

दो प्रबन्ध (आयतें 4, 5)

आयत 4 में पौलुस ने व्यवस्था/कामों के प्रबन्ध की समीक्षा की: ''काम करनेवाले की मजदूरी देना दान [*logizomai*[2]] नहीं परन्तु हक्क समझा जाता है।'' इसमें बताया गया नियम इतना स्पष्ट है कि इसकी थोड़ी सी या ज़रा भी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है। यदि आप किसी के लिए काम करते हैं तो मिलने वाले वेतन को आप उपहार या दान नहीं मानेंगे। आप यह नहीं मानते कि आपका नियोक्ता आप पर ''तरस'' खा रहा है। शिष्टाचार के तौर पर आप ''धन्यवाद'' कह सकते हैं, परन्तु आपको सचमुच विश्वास है कि आप उस पैसे के *हक्कदार* हो।

आयत 4 में अनुवादित शब्द ''दान'' ''अनुग्रह'' (देखें KJV) के लिए शब्द *charis* से लिया गया है। ''हम'' शब्द का अनुवाद *opheilema* से किया गया है जिसका अर्थ ''जो कानूनी तौर पर देना बनता हो,''[3] यानी ''कर्ज़'' (देखें KJV) है। व्यवस्था/काम का प्रबन्ध यह घोषित करता है कि हमारा उद्धार *अनुग्रह* से नहीं बल्कि यह कहता है कि हमारे भले काम परमेश्वर को हमारे *कर्ज़दार* बना देते हैं।

आयत 5 में पौलुस ने इस प्रबन्ध को अनुग्रह/विश्वास से किया ''परन्तु जो काम नहीं करता

बरन भक्तिहीन के धर्मी ठहराने वाले पर विश्वास करता है उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।''''जो काम नहीं करता'' वाक्यांश के लिए कुछ योग्यता की आवश्यकता है। संदर्भ से बाहर लेने पर इसका अर्थ यह लगेगा कि प्रभु के लिए काम करना अनावश्यक है, जो ऐसा विचार है कि अधिकतर धार्मिक लेखकों को भयभीत कर देगा और निश्चय ही पौलुस इससे स्तब्ध रह जाता। क्या पौलुस यह मानता था कि प्रभु के लिए काम करना आवश्यक है ? बेशक। रोमियों 16:12 में उसने पिरसिस की सराहना की जिसने ''प्रभु में बहुत परिश्रम किया'' था। पौलुस आम तौर पर ''प्रभु के काम में'' अपना सब कुछ लगा देने के लिए अपने पाठकों को प्रोत्साहित करता था (1 कुरिन्थियों 15:58; देखें गलातियों 5:6; इफिसियों 2:10; कुलुस्सियों 1:10; 1 तीमुथियुस 5:17; 6:18)। यह संदेहपूर्ण है कि अपने प्रभु के लिए पौलुस से अधिक किसी ने परिश्रम किया हो (देखें 1 कुरिन्थियों 15:10; 2 कुरिन्थियों 11:23, 27)।

इसलिए यह स्पष्ट है कि ''जो काम नहीं करता'' वाक्यांश की कुछ व्याख्या आवश्यक है। इसकी व्याख्या करने का सबसे आसान ढंग 4 और 5 आयतों में दो वाक्यांशों ''काम करने वाले'' और ''जो काम नहीं करता'' में तुलना करना है। ''काम करने वाला'' (आयत 4) कर्मचारी होता है जो वेतन पाने *के लिए* ''काम करता है।''''जो काम नहीं करता'' (आयत 5) वह विश्वासी है, जो प्रभु को अपना कर्ज़दार बनाने *के लिए* परमेश्वर के लिए ''काम न करने वाला'' विश्वासी है, बल्कि प्रेम और धन्यवाद व्यक्त करने के लिए काम करता है। लियोन मौरिस ने लिखा है, ''अंतर कर्मचारी और गैर कर्मचारी में नहीं (पौलुस यहां आलस्य [को बढ़ावा] नहीं दे रहा), बल्कि अपने कामों में भरोसा करने वाले और परमेश्वर में भरोसा करने वाले में है।''[4]

इस योग्यता को ध्यान में रखते हुए हम आयत 5 में वापस आते हैं। इसका आरम्भ होता है, ''परन्तु जो काम नहीं करता [परमेश्वर को अपना कर्ज़दार बनाने के लिए] वरन [इसके बजाय] भक्तिहीन के धर्मी ठहराने वाले पर विश्वास करता है उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है'' (आयत 5)। ''भक्तिहीन'' का अनुवाद (*asebes*) से किया गया है, जो ''परमेश्वर के

व्यवस्था/ कामों का प्रबन्ध	**अनुग्रह/विश्वास का प्रबन्ध**
↑	↑
अपने आप में भरोसा	परमेश्वर/मसीह में भरोसा

प्रति भयदायक नि:सहाय'' की व्याख्या के लिए एक मज़बूत शब्द है। परमेश्वर उन लोगों को धर्मी ठहराता है जो ''गुण से बिल्कुल रहित हैं।''[5] वह ऐसा करने में सक्षम है, क्योंकि उसने पाप के लिए प्रायश्चित के रूप में अपने पुत्र को दे दिया (3:25); ''मसीह भक्तिहीनों के लिए *मरा*'' (5:6ख)।

जब कोई परमेश्वर (और उसके पुत्र) में भरोसा रखता है, तो ''उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है (*logizomai*)।'' पिछले पाठ में हमने ''परमेश्वर का अद्‌भुत 'गिनती करने के प्रबन्ध' '' पर बात की थी। 4:5 में हमें आश्वस्त किया गया है कि परमेश्वर ''गिनती करने का प्रबन्ध'' का इस्तेमाल हम पर करता है! TEV में ''उसका *विश्वास* ही है जिसका हिसाब

परमेश्वर करता'' है।

एक दूसरा उदाहरण (आयत 6-8)

कामों से नहीं बल्कि विश्वास से धर्मी ठहराए जाने वाले के अपने मुख्य उदाहरण के रूप में रोमियों 4 में पौलुस ने अब्राहम को ध्यान में रखा। परन्तु 6 से 8 आयतों में उसने एक और उदाहरण जोड़ा, एक और व्यक्ति जिसके प्रति यहूदियों की बड़ी श्रद्धा थी, और वह राजा दाऊद था। पौलुस ने अभी-अभी कहा था कि परमेश्वर ''भक्तिहीन को धर्मी ठहराता है।'' अब्राहम के ''भक्तिहीन'' होने पर कुछ यहूदियों के दिमाग में संदेह हो सकता था, पर दाऊद के बारे में किसी को कोई शक नहीं हो सकता था। केवल कुछ सप्ताहों के दौरान ही दाऊद ने दस में से चार आज्ञाएं तोड़ी थीं (2 शमूएल 11; 12; निर्गमन 20:13, 14, 16, 17)। दाऊद के उदाहरण से केवल इस तथ्य पर कि फिर से जो नहीं मिलना था कि पुराने नियम में विश्वास से धर्मी ठहराए जाने का नियम बताया गया था बल्कि इससे इसके नियम के दूरगामी होने को भी समझाया जाना था।

पौलुस ने कहा:

> जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता है। कि धन्य[6] वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा हुए, और जिन के पाप ढांपे गए। धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए (आयतें 6-8)।[7]

उद्धृत वचन भजन संहिता 32:1, 2 से है। कई लेखकों का मानना है कि भजन संहिता 51 और 32 बतशेबा[8] के साथ दाऊद के पाप से सम्बन्धित है। जिसमें भजन संहिता 51 क्षमा के लिए दाऊद की पुकार है,[9] जबकि भजन संहिता 32 परमेश्वर द्वारा उसे क्षमा किए जाने के बाद धन्यवाद की उसकी अभिव्यक्ति है।[10]

पौलुस ने कहा कि भजन संहिता 32:1, 2 में दाऊद ने कहा, ''जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता [*logizomai*] है'' (रोमियों 4:6)। इस पृष्ठभूमि में ''धर्मी ठहराता है'' का अर्थ परमेश्वर के उस व्यक्ति को जो बड़ा अधर्मी होने का दोषी पाया गया था (दाऊद) ''धर्मी गिनना'' है। अन्य शब्दों में रोमियों 4:6 में परमेश्वर का ''धर्मी'' ठहराना अपने भटकी हुई संतान के क्षमा करने से जुड़ा है।

भजन संहिता 32:1, 2 में दाऊद ने परमेश्वर की करुणा के लिए कृतज्ञता प्रकट की। यह दिखाने के लिए कि वह कितना कृतज्ञ है उसने कई शब्द दिए। यूनानी भाषा में उसके पाप की शत्रुता ब्यान करते दो शब्द *anomia* (जिसका अनुवाद ''अधर्म के काम'' है) और *hamartia* (''पाप'') का बहुवचन रूप मिलते हैं।[11]

तीन अन्य शब्द प्रभु की करुणा की बड़ाई को दिखाते हैं। पहले तो दाऊद के अधर्म के काम ''क्षमा'' (*aphienai* का एक रूप) किए गए थे। फ्रैंज़ डेनिश ने भजन संहित 32:1 के ''क्षमा हुए'' के लिए शब्द की परिभाषा ''उठाकर दूर ले जाना'' के रूप में की है।[12]

दूसरा, दाऊद के पाप ''ढांपे गए'' थे। अनुवादित शब्द ''ढांपे गए'' (*epikalupto*) ''ऊपर से ढकना'' (*epi* [''ऊपर''] के साथ *kalupto* [''ढकना'']) के अर्थ वाला एक मिश्रित शब्द

है। NLT में ''नज़र से दूर करना''; AB में ''ढक दिया और पूरी तरह दफ़ना दिया'' है। डेनिश ने ''ढांपे गए'' शब्द की परिभाषा ''ढकना, जिससे यह परमेश्वर को, जो पवित्र है, दिखाई न दे और ऐसे हो जैसे कभी हुआ ही नहीं'' के रूप में की है।[13]

पौलुस के तर्क का सबसे अधिक महत्व तीसरे शब्द का था जिसका अनुवाद ''लेखा लेना'' हुआ है। रोमियों की पुस्तक में उद्धृत करते हुए भजन संहिता में कहा गया है, ''जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले।'' ''लेखा लेना'' का अनुवाद *logizomai* से किया गया है, जिसका अनुवाद शेष अध्याय में ''ठहराता'' या ''ठहराना'' है। पौलुस ''परमेश्वर का अद्भुत 'गिनती करने का प्रबन्ध' '' को देखने का एक और तरीका बता रहा था। 3 और 5 आयतों में उसने परमेश्वर के ''बही-खाते'' को देखने का सकारात्मक ढंग बताया था: परमेश्वर ने ''खाते'' के ''क्रेडिट'' पक्ष में ''अधर्मी'' को ''धर्मी'' गिना था। आयत 8 में पौलुस ने ईश्वरीय ''खाता'' को देखने का नकारात्मक ढंग बताया। परमेश्वर ने ''खाता'' के ''डेबिट'' पक्ष में अधर्मी को अधर्मी *नहीं* ठहराया। रोमियों 4:8 में CJB का अनुवाद है ''धन्य है वह मनुष्य जिसका पाप [परमेश्वर] उसके खाते में नहीं डालेगा।''

इस बात को समझने के लिए कि यह कितना अद्भुत था, उस पर विचार करें। जो दाऊद अपने किए के लिए *योग्य* था। मूसा की व्यवस्था के अनुसार वह कम से कम दो बार पथराव करके मार डाले जाने के योग्य था जिसमें एक तो व्यभिचार (व्यवस्थाविवरण 22:22, 24; देखें यूहन्ना 8:5) और दूसरा हत्या (लैव्यव्यवस्था 24:17) था। परन्तु उसका पाप सामने आने पर उसे नगर से बाहर घसीटकर तब तक पथराव नहीं किया गया जब तक उसके टूटे हुए शरीर में से सांस न निकल जाए। इसके बजाय उसके पाप क्षमा कर दिए गए ... और ढांप दिए गए ... और उसके लेखे में नहीं लिखे गए! कोई आश्चर्य नहीं कि उसने अपने आप को ''धन्य'' कहा!

पौलुस ने कहा कि भजन संहिता 32:1, 2 ''बिना कर्मों के'' (रोमियों 4:6) परमेश्वर के धर्मी ठहराने का एक उदाहरण है। पौलुस यह सुझाव *नहीं* दे रहा था कि क्षमा किए जाने के लिए दाऊद को कुछ *करना* नहीं पड़ा था। दाऊद का मन पश्चात्ताप में टूटना आवश्यक था (देखें भजन संहिता 51:17)। उसे प्रभु के सामने अंगीकार करते हुए अपने पाप को मान लेना आवश्यक था (देखें भजन संहिता 32:5; 51:3, 4) उसे प्रार्थना करते हुए प्रभु से क्षमा मांगना आवश्यक था (देखें भजन संहिता 51:1, 2, 9; 32:6)। पौलुस यह कह रहा *था* कि ऐसा कोई ''काम'' नहीं था, जिससे दाऊद परमेश्वर से क्षमा कमा सकता। जब प्रभु ने उसे क्षमा कर दिया तो यह कामों के आधार पर नहीं बल्कि अनुग्रह के कारण था।

दाऊद के उदाहरण में (रोमियों 4:6-8), पौलुस ने विश्वास का उल्लेख नहीं किया; परन्तु उसके बहुत से यहूदी पाठकों को भजन संहिता 32 जुबानी पता होगा। पहली दो आयतें उद्धृत करने से उनके दिमाग में पूरा भजन आ गया होगा जिसमें ये शब्द भी थे: ''परन्तु जो यहोवा पर *भरोसा रखता* है वह करुणा से घिरा रहेगा'' (आयत 10ख)।

चिंताओं की बात की गई

हमारे वचन पाठ में पौलुस का मूल संदेश स्पष्ट प्रतीत होता है: मसीहियत व्यवस्था/काम का प्रबन्ध *नहीं* है बल्कि यह अनुग्रह/विश्वास का प्रबन्ध है। जब प्रभु हमारी ओर देखता है तो वह

हमारे अधूरे आज्ञापालन की ओर ध्यान नहीं करता बल्कि हमारे विश्वास को देखता है। (परमेश्वर का धन्यवाद हो!)

यहां शिक्षा चाहे स्पष्ट लगती है परन्तु इस शिक्षा के विस्तारों पर काफ़ी विवाद पाया जाता है। जो चरम की ओर हैं उनका कहना है, ''स्पष्टतया, पौलुस की शिक्षा किसी भी प्रकार के काम को नकारती है। विशेषकर यह उद्धार की शर्त के रूप में बपतिस्मे को निकाल देती है। यदि उद्धार पाने के लिए हमें कुछ *करना* है तो इसका अर्थ यह होगा कि हम अपना उद्धार *कमाते* हैं।'' दूसरे चरम पर होने वालों का उत्तर है, ''यदि हम यह सिखाते हैं कि लोग कामों से धर्मी नहीं ठहराए जाते, तो हम लोगों को प्रभु के लिए काम करने से निराश करेंगे।'' ये प्रतिक्रियाएं आम पाई जाती हैं इसलिए शायद हमें उन पर चर्चा करने के लिए समय निकालना चाहिए।

काम बनाम आज्ञापालन

किसी कारण कुछ लेखकों द्वारा रोमियों 4 की मुख्य प्रासंगिकता परमेश्वर की संतान बनने से सम्बन्धित है। वे इस तथ्य के बावजूद ऐसी प्रासंगिकता बनाते हैं कि पौलुस के उदाहरण (अब्राहम और दाऊद) पहले से परमेश्वर की संतान थे।[14] स्पष्टतया इनमें से अधिकतर लेखकों की मुख्य इच्छा मनुष्य के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना के भाग के रूप में बपतिस्मे को निकालना है।

पहले एक पाठ में मैंने कहा था कि परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों को स्पष्ट ''विरोधों'' की उतनी चिंता नहीं थी जितनी हम में से कइयों को है। रोमियों 4 अध्याय में पौलुस ने ज़ोरदार ढंग से यह सिखाया कि हम कामों से धर्मी *नहीं* ठहराए जाते। इसके साथ ही रोमियों 10 अध्याय में पहुंचने पर हम देखेंगे कि पौलुस यह कहने से नहीं हिचकिचाया कि मुंह से अंगीकार करना (यानी कुछ *करना*) उद्धार का कारण बनता है (आयत 10)। रोमियों 6 में उसने मन से आज्ञापालन की बात की (आयत 17) (यानी कुछ *किया गया*), जिसमें बपतिस्मे में गाड़े जाना शामिल है (आयतें 3-6)। पानी की उस कब्र में गाड़े जाने *के बाद* व्यक्ति ''जीवन के नयेपन में'' चलने के लिए जी उठता है, जिसके बाद वह पाप का दास नहीं रहता (आयतें 4, 17, 18; देखें 7:6)। परन्तु पौलुस ने उद्धार के इन दो पहलुओं को मिलाने का कोई प्रयास नहीं किया। यह सत्य है कि हम कर्मों से धर्मी ठहराए (बचाए) नहीं जाते। यह भी सच है कि हमें परमेश्वर की आज्ञा मानना आवश्यक है, जिसमें उद्धार पाने (धर्मी ठहराए जाने) के लिए अपने विश्वास का अंगीकार करके बपतिस्मा लेना शामिल है। पौलुस दोनों सच्चाइयों को प्रस्तुत करके उन्हें यहीं छोड़कर संतुष्ट था।

''कमाना'' बनाम ''अपनाना''

तौ भी आम तौर पर मुझे और आप को प्रेरित के इस संदेश को मिलाने में कठिनाई आती है कि हमारा उद्धार बाइबल की शिक्षा कि उद्धार पाने के लिए हमें कुछ *करना* आवश्यक है, से कामों के द्वारा नहीं होता। मैंने एक व्याख्या सुनी थी जिससे मुझे सहायता मिली; हो सकता है कि आपको इससे सहायता मिले कि हम अपना उद्धार *कमा* नहीं सकते परन्तु हमें इसे *अपनाना* आवश्यक है।

किसी चीज़ को कमाने और उसे अपनाने में क्या अन्तर है? एक उदाहरण सहायक हो सकता है।[15] एक आदमी दरवाज़ा खटखटाता है और कहता है कि उसे भूख लगी है। घर का

मालिक कहता है कि उसके पास कुछ लकड़ियां हैं जिन्हें काटना है, यदि वह उन लकड़ियों को काटे तो उसे खाना मिल सकता है। वह आदमी लकड़ियां काटता है और उसे खाना मिल जाता है। उस आदमी ने अपना भोजन *कमाया* है। एक और आदमी किसी और का दरवाज़ा खटखटाता है और कहता है कि उसे भूख लगी है। इस घर का मालिक उत्तर देता है, ''तुम बिल्कुल सही समय पर आए हो। मैंने काफ़ी खाना बनाया हुआ है, जो मेरे लिए बहुत अधिक है। अन्दर आओ और मेरे साथ खाओ!'' वह आदमी घर के अन्दर जाकर मेज़ पर बैठ जाता है और परोसे गए खाने का आनन्द लेता है। इस आदमी ने भोजन कमाया *नहीं* है। तौभी इसे *अपनाना* पड़ा। यदि वह घर के अन्दर आकर मेज़ पर न बैठता और खाना अपने मुंह में न डालता तो क्या होता? उसे उस खाने से जो उसे दिया गया, मिलने वाली शक्ति न मिलती।

हम उद्धार के परमेश्वर के दान को *कमा* नहीं सकते, परन्तु हमें इसे *अपनाना* आवश्यक है। प्रश्न यह है कि हम उसे *कैसे* अपना सकते हैं। यह स्पष्ट है कि हम परमेश्वर के कुछ दानों को कैसे अपनाते हैं। हम परमेश्वर के खाने के दान को उसे खाकर अपनाते हैं। उद्धार के परमेश्वर के दान को अपनाने का ढंग इतना स्पष्ट नहीं है। वास्तव में वह ढंग बताने वाला केवल परमेश्वर ही है और वह इसे अपने वचन में बताता है। परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि हम *विश्वास से* उद्धार को अपना सकते हैं और यह विश्वास *आज्ञापालन* में व्यक्त किया जाना आवश्यक है।

कोई पसन्द नहीं बनाम व्यक्तिगत पसन्द

मैं फिर किसी के विरोध का अनुमान लगाता हूं: ''परन्तु यदि हमें कुछ *करना* ही है तो यह तो *काम* हुआ। पौलुस ने कहा है कि हमारा उद्धार कामों से *नहीं* होता।'' रोमियों की पुस्तक पर असंख्य टीकाओं को देखने के बाद मैं ''काम'' और ''कर्मों'' शब्दों के प्रति बहुत से धार्मिक लेखकों के व्यवहार के बारे में इन दो बातों से कायल हुआ हूं।

पहली बात तो यह कि मैं यह मान गया कि ''काम'' शब्द कुछ परेशान करता है। टीकाकार यह अर्थ निकालने के लिए इतने भयभीत हैं कि मनुष्य को उद्धार पाने के लिए कुछ करना आवश्यक है कि वे यह भी ज़ोर देते हैं कि ''विश्वास'' कोई काम नहीं है। यह सच है कि विश्वास ''खूबी का काम'' नहीं है परन्तु यह इस अर्थ में ''काम'' *है* कि यह कुछ ऐसा है जिसे किया जाता है। चार्ल्स हॉज ने लिखा है कि ''विश्वास को प्रार्थना, मन फिराने, चंदा देने या किसी भी प्रकार के काम करने की तरह ही, कार्य के रूप में माना जाता है।''[16] विश्वास के सम्बन्ध में ''काम'' शब्द का इस्तेमाल करने में यीशु को कोई दिक्कत नहीं थी। उसने कहा, ''परमेश्वर का कार्य यह है कि तुम उस पर जिसने उसे भेजा है उस पर विश्वास करो'' (यूहन्ना 6:29)। NCV में इस आयत का अनुवाद इस प्रकार किया गया है, ''परमेश्वर तुमसे जो काम करवाना चाहता है वह यह है कि उसके भेजे हुए पर विश्वास करो।''

जो लोग यह ज़ोर देते हैं कि ''विश्वास कोई काम नहीं है'' वे विश्वास का वर्णन इस प्रकार के रूपक से करते हैं: ''विश्वास परमेश्वर की ओर खाली हाथ फैलाना है।'' इस रूपक से मेरा कोई झगड़ा नहीं है परन्तु वे यह नहीं समझते कि ''हाथ फैलाना'' एक काम है? ''हाथ फैलाना'' के लिए हो सकता है कि *अधिक* न करना पड़े परन्तु *कुछ* तो करना पड़ता है।

इसे देखने का एक ढंग यह है कि विश्वास बपतिस्मे से अधिक ''काम'' है। क्योंकि विश्वास

कुछ ऐसा है जो आप *करते* हैं जबकि बपतिस्मा कुछ ऐसा है जो आप *के लिए* किया गया है। पापी व्यक्ति विश्वास करने में सक्रिय है परन्तु बपतिस्मा लेते समय वह निष्क्रिय हो जाता है। डेविड लिप्सकॉम्ब ने इस पर टिप्पणी की है:

> बपतिस्मे को कई बार बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति का काम कहा जाता है ... परन्तु बपतिस्मे में विश्वास या मन फिराव दोनों में से किसी के भी काम के कम गुण हैं। ... बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति अपने आप को बपतिस्मा देने वाले के हाथों में सौंप देता है और अपने आप से दफ़न हो जाता है, ताकि मसीह में जी उठे [देखें रोमियों 6:3-6]। ... जब कोई मर जाता है तो उसके मित्र उसकी देह को लेकर उसे दफ़नाते हैं, कोई इसे दफ़नाए जाने वाले व्यक्ति का काम नहीं कह सकता।[17]

दूसरा, मेरा मानना है कि परमेश्वर के उद्धार के दान को मनुष्य जाति के अपनाने में ''कर्मों'' (कुछ करना) की जगह के साथ वास्तव में समझ नहीं पाए हैं। कई लोग *विलियम टैम्पल* के शब्दों को दोहराते हैं: ''अपने छुटकारे के लिए मेरा योगदान केवल [मेरा] पाप ही हो सकता है। ...''[18] कई लोग यह कहकर संतुष्ट हो जाते हैं कि हम *उद्धार पाने के लिए* काम नहीं करते बल्कि *इसलिए करते हैं क्योंकि* हम उद्धार पाए हुए हैं। यह एक ऐसा वाक्य है जिसमें कुछ सच्चाई तो है परन्तु यह पूरी सच्चाई ब्यान करने में असफल हो जाता है।

मैं इन लेखकों की साफ़-साफ़ कहने की इच्छा की सराहना करता हूं कि उद्धार ऐसा *दान* है जिसे *कमाया* नहीं जा सकता। इसके साथ ही मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वे कैल्विनवादी पहले से ठहराए होने की शिक्षा और हर व्यक्ति की स्वतन्त्र इच्छा में विश्वास करने वालों में पाए जाने वाले झगड़े के दिनों को भूल गए।

पहले से ठहराए जाने की शिक्षा देने वाले वे लोग सिखाते थे कि अपने उद्धार का कोई *कुछ नहीं* कर सकता। उनका मानना था कि परमेश्वर ने पहले से ठहरा दिया है कि किस-किस का उद्धार होगा और कौन नष्ट होगा। ''चुने हुओं'' के लिए कहा जाता था कि अपने उद्धार के लिए उन्हें कुछ करने की आवश्यकता नहीं। विश्वास यह था कि परमेश्वर ने जानबूझकर उनके मनों में विश्वास डाला और उन्हें आत्मिक जीवन दिया। दूसरी ओर स्तवन्त्र इच्छा की वकालत करने वाले यह ज़ोर देते थे कि बाइबल सिखाती है कि हर व्यक्ति ''स्तवन्त्र नैतिक जीव'' है। किसी का उद्धार या नाश होना परमेश्वर द्वारा लिए गए निर्णय पर निर्भर नहीं बल्कि सुसमाचार को उस व्यक्ति के मानने या न मानने पर निर्भर है (देखें रोमियों 10:16)।

अगले पाठों में हम पहले से ठहराए जाने की शिक्षा पर चर्चा करेंगे। अभी के लिए हम केवल यह देखते हैं कि अधिकतर लोग जो अपने आप को ''मसीही'' कहते हैं, उनका मानना है कि बाइबल स्वतन्त्र इच्छा की ही शिक्षा देती है। मेरे सामने पड़े हर टीका की डॉक्ट्रिनल स्थिति यही लगती है। ऐसा है तो लेखकों के लिए यह मानना क्यों कठिन होना चाहिए कि अन्त में यह हर व्यक्ति पर निर्भर करता है कि उद्धार पाना है या नहीं?

- वह सुसमाचार को सुन सकता है या इसकी उपेक्षा कर सकता है।
- वह यीशु में विश्वास कर सकता है या विश्वास करने में नाकाम रह सकता है।

- वह प्रभु के निमन्त्रण को स्वीकार कर सकता है या इसे ठुकरा सकता है।
- वह परमेश्वर की आज्ञा को मान सकता है या इसे मानने से इनकार कर सकता है।
- वह मसीह के पीछे चल सकता है या इससे दूर जा सकता है।

यदि कोई सुनता, विश्वास करता, स्वीकार करता, आज्ञा मानता और पीछे चलता है तो क्या इसका अर्थ यह है कि उसने अपना उद्धार कमा लिया है? बिल्कुल नहीं। परन्तु इसका अर्थ यह अवश्य है कि अपने उद्धार में उसका योगदान है। मैं मानता हूं कि इसकी तुलना उससे ''बिल्कुल नहीं'' की जा सकती जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है। यह बहुत ही *छोटा* योगदान है परन्तु फिर भी है यह योगदान। यहां तक व्यक्ति अपने ही उद्धार में योगदान देता है। हम ''योगदान'' शब्द को घुमाएं नहीं; केवल इतना समझें कि बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर के अनुग्रह को अपनाने के लिए व्यक्ति के लिए कुछ *करना* आवश्यक है (प्रेरितों 2:37, 38)।

कर्त्तव्य बनाम प्रेम

इस पाठ में अधिकतर उन लोगों की चिंताओं की बात की गई है जिन्हें लगता है कि आज्ञापालन की आवश्यकता पर शिक्षा अनुग्रह पर पौलुस की शिक्षा को नकारती है। परन्तु खत्म करने से पहले मैं इस चिंता पर कि ''विश्वास से धर्मी ठहराया जाना'' लोगों को प्रभु के लिए काम करने से पीछे कर सकता है कुछ कहना चाहता हूं।

रोमियों 4 पर चर्चा और व्यवस्था/काम के प्रबन्ध के साथ अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध की तुलना करते हुए भाई थॉमस ने ज़ोर दिया कि सही ढंग से समझे जाने पर दूसरा प्रबन्ध कम नहीं बल्कि *अधिक* काम का ही कारण बनेगा। उन्होंने एक युवती के उदाहरण सहित जो नर्स बनने के लिए ट्रेंड की गई थी, कई उदाहरण इस्तेमाल किए:[19]

> एक नर्स ट्रेनिंग करने के बाद ग्रेजुएट होती है और उसे निमोनिया से बुरी तरह से पीड़ित एक बच्चे की देखभाल का काम मिलता है। यहां उसका काम मानवीय गुण का है। जिसे वह वेतन के लिए करती है, और जैसा काम वैसा वेतन के आधार पर उसे काम मिलता है। तर्कसंगत रूप से कहें तो वह इस प्रबन्ध से की गई कमाई पर घमण्ड कर सकती है, क्योंकि काम अच्छी तरह करने के बदले उसे श्रेय दिया जाना उसका हक्क है। दिया जाने वाला प्रतिफल या वेतन उसे दान के रूप में नहीं बल्कि कर्ज़ के रूप में दिया जाता है। वेतन तय करने के लिए अनुग्रह या प्रेम का इस्तेमाल नहीं किया गया। परन्तु बाद में उस नर्स की शादी हो जाती है और उनके घर में अपना बच्चा होता है जिसे निमोनिया हो जाता है और उसे एक योग्य नर्स की सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है। वह मां अब अपनी सेवाओं के लिए वेतन पाने के लिए काम नहीं करेगी। वह उस बच्चे के लिए अपने प्रेम और सम्बन्ध के आधार पर उस काम को करने के लिए तैयार होती है जिसके लिए उसने शिक्षा पाई थी। जब बच्चा दुखी होता है, तो वह भी दुखी होती है; जब बच्चा खुश होता है तो पूरा परिवार खुश होता है। वह अब और मेहनत से और अधिक देर तक अपने प्रेम और सम्बन्ध के कारण काम करती है, और कभी घड़ी नहीं देखती। उसका काम अब मसीही व्यक्ति के ''विश्वास के आज्ञापालन'' के काम का रूपक है।[20]

परमेश्वर के अद्‌भुत अनुग्रह में बढ़ने पर प्रभु के लिए आपके प्रयास ''अपना कर्त्तव्य पूरा करने'' के लिए कम से कम और ''प्रेम का परिश्रम'' करने के लिए अधिक से अधिक होते जाएंगे (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 1:3)!

सारांश

धर्मी ठहराए जाने के दो प्रबन्धों अर्थात व्यवस्था/कामों का प्रबन्ध और अनुग्रह/विश्वास का प्रबन्ध पर पाठ के आरम्भ में दिया रेखाचित्र फिर देखें।

- पहला किसी के किए काम के लिए *घमण्ड करने* (आयत 2) को बढ़ावा देता है, जबकि दूसरा, *दीनता* और परमेश्वर पर निर्भरता के बोध को बढ़ावा देता है।
- पहले में जो व्यक्ति के उद्धार *कमाने* पर ज़ोर देता है जबकि दूसरा यह घोषणा करता है कि उद्धार कमाना असम्भव है यानी यह ''कर्मों से नहीं [और न हो सकता है]।''
- पहला *मानवीय गुण* पर आधारित है जबकि दूसरा यह मान लेता है कि आत्मिक आशिषें *अपने आप से नहीं* बल्कि परमेश्वर की ओर से हैं।
- पहला मानवीय *प्राप्ति* पर केन्द्रित है जबकि दूसरा *परमेश्वर में भरोसा रखने* पर आधारित है।
- पहला उद्धार को परमेश्वर के ऊपर हमारा *कर्ज़* बनाने का प्रयास करता है (आयत 4), जबकि दूसरा मानता है कि छुटकारा प्रभु की ओर से *एक दान* है।

इस अन्तर पर ध्यान से विचार करें। पौलुस ने कौन से प्रबन्ध की शिक्षा दी? आप कौन से प्रबन्ध के अधीन होना चाहेंगे? कौन सा प्रबन्ध *उम्मीद* देता है।

एक बार एक इवैंजलिस्ट स्कॉटलैंड के एक बड़े नगर की झोंपड़ पट्टी में वचन सुना रहा था। शराबियों, ''गली के लोगों'' और वेश्याओं से बात करते हुए उसने उन्हें ''नाले में से अपने आप को निकाल लेने'' के लिए प्रोत्साहित किया। उसने उन्हें नया जीवन आरम्भ करने की चुनौती दी। भीड़ के एक ओर एक महिला खड़ी थी जिसका जीवन पाप में गरक और पूरी तरह से डूबता जा रहा था। बेहतर करने की बार-बार शिक्षा को एक घण्टा सुनने के बाद वह अधिक देर रुक नहीं पाई। वह वक्ता से कहने लगी, ''आपकी रस्सी बहुत छोटी है मुझ तक नहीं पहुंच सकती!''[21] अपने पापी होने तथा कमियों से परिचित कोई भी व्यक्ति जानता है कि व्यवस्था/कामों के प्रबन्ध की ''रस्सी'' इतनी छोटी है कि उसके पाप तक पहुंचकर उसे उसके दोष में से निकाल नहीं सकती। केवल अनुग्रह/कामों के प्रबन्ध की ''रस्सी'' ही इतनी लम्बी है कि यह पापी तक पहुंच सकती है। वह ''रस्सी'' क्रूस पर मसीह की मृत्यु में दिखाया गया परमेश्वर का प्रेम है!

टिप्पणियां

[1]यह आरम्भिक शृंखला 1955 में अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज में रोमियों की पुस्तक की जे. डी. थॉमस की क्लास के मेरे संस्मरणों तथा नोट्स पर आधारित है। [2]4:1-3, 5 के सम्बन्ध में *logizomai* पर चर्चा देखें। [3]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि. *वाइन'स कम्पलीट एक्पोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड*

न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 150. [4]लियोन मौरिस, द एपिस्टल टू द रोमन्स (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 198. [5]वही। [6]अनुवादित शब्द ''धन्य'' (*makarios*) का अर्थ वह विशेष आनन्द है जो परमेश्वर का विश्वास योग्य बालक ही जान सकता है। इसे ''आनन्द और इससे अधिक'' के रूप में माना जा सकता है। [7]जैसा कि आमतौर पर पौलुस करता था, उसने यहां पुराने नियम के यूनानी अनुवाद (सप्तत्ति या LXX) से उद्धृत किया। [8]यदि आपके सुनने वाले उस कहानी से परिचित नहीं हैं तो आप इसे बता सकते हैं। [9]भजन संहिता 51 से पहले एक पुराना शीर्षक है ''क्षमा के लिए एक पश्चात्तापी पापी की प्रार्थना।'' [10]जेम्स ई. स्मिथ, *दि विज़डम लिटरेचर एंड साम्ज़, ओल्ड टैस्टामेंट सर्वे सीरीज़* (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1996), 261.

[11]3:23 पर हमारी चर्चा में ''पाप'' शब्द पर शब्द अध्ययन देखें। ''पाप'' का क्रिया रूप उस आयत में इस्तेमाल किया गया था, जबकि 4:7, 8 में संज्ञा रूप इस्तेमाल किया गया है। [12]सी. एफ. केल एंड फैंज़ डेलिश ''साम्ज़'' *कमैंट्री ऑन ओल्ड टैस्टामेंट,* अंक 5 (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 395. [13]वही। ''जैसा कभी हुआ ही न हो'' शब्द केवल दाऊद के पाप के दोष के लिए हैं, न कि उस पाप के परिणामों के लिए (देखें 2 शमुएल 12:10)। [14]राबर्टसन एल. व्हाइटसाइड, *ए न्यू कमैंट्री ऑन पॉल 'स लैटर टू द सेंट्स एट रोम* (फोर्ट वर्थ, टैक्सस: मैनी कं., 1945), 89-90 में इस विचार को विस्तार दिया गया है। [15]जहां आप रहते हैं वहां की आवश्यकता अनुसार इस उदाहरण को अपना लें (उदाहरण के लिए, किसी आदमी को कहे जाने वाले काम की किस्म के बारे में)। [16]चार्ल्स हॉज, *कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द रोमन्स* (प्रिंसटन, न्यू जर्सी: पृष्ठ नहीं, 1886; रिप्रिंट गैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1968), 109. [17]डेविड लिप्सकॉम्ब, *ए कमैंट्री ऑन दि न्यू टैस्टामेंट एपिस्टल्स,* अंक 1, रोमन्स, द्वितीय संस्करण, संसो. व विस्तार (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1943), 82. [18]लैसली सी. एलन, ''रोमन्स,'' *न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री,* सम्पा. एफ. एफ. ब्रूस (गैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 1324 में उद्धृत। [19]ये उदाहरण, और एक और उदाहरण, डेविड रोपर, जीज़स क्राइस्ट एंड हिम क्रूसिफाइड (अरवदा, कोलोराडो: क्रिश्चियन कम्युनिकेशंस, 1976), 106-8 में दिए गए हैं। [20]जे. डी. थॉमस, रोमन्स, दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 33.

[21]डेविड एफ़. बर्गस, संक., *इन्साक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन इलस्ट्रेशंस* (सेंट लूइस: कंकोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 125 से लिया गया।